श्री अहोई
अष्टमी
श्री अहोई अष्टमी व्रत कथा

अहोई अष्टमी व्रत कथा

अहोई अष्टमी व्रत कथा , पूजा विधि और समाग्री

instapdf.in

अहोई अष्टमी व्रत कथा

प्राचीन काल में एक साहुकार था। उसके घर में उसकी 7 बहुएं रहती थी। दिवाली के दिन उसकी एकलौती लड़की भी अपने मायके आई हुई थी। एक दिन सभी बहुएं दिवाली पर घर को मिट्टी से लीपने के लिए मिट्टी लेने जंगल गई। उनके साथ उनकी ननंद भी गई थी। साहुकार की बेटी जहां मिट्टी काट रही थी वहां एक साही का लड़का खेल रहा था।

साहू की बेटी से गलती से खुरपी के चोट से साही के बेटे की मौत हो गई। साही इतनी क्रोधित हुई कि उसने साहूकार की बेटी की कोख बांधने की बात कही।

वचन सुनकर साहुकार की बेटी सभी भाइयों से अपने बदले कोख बंधवाने के लिए प्रार्थना की। उसकी सबसे छोटी भाभी इस बात के लिए राजी हो गई। अब उसके जब भी कोई बच्चा होता तो 7 दिन बाद मर जाता था। ऐसे ही उसके 7 पुत्रों की मौत हो गई। इसके बाद उसने पंडित की सलाह ली तो पंडित ने कहा कि सुरही गाय की सेवा करने से ही लाभ मिलेगा।

instapdf.in

सुरही उस महिला की सेवा से खुश हुई और उसे स्याहु के पास लेकर गई। रास्ते में जब दोनों थक गए तो पानी पीने रुके। इतनें में साहुकार की छोटी बहू की नजर एक गरूड पंखनी पर पड़ी जिसे सांप डंसने जा रहा था। वह फौरन वहां पहुंची और सांप को मार दिया। जब गरूड पंखनी की मां वहां पहुंची तो वर साहुकार की बेटी पर ही चोंच मारने लगी। जब बहू ने बताया कि उसके बच्चे की जान उसी ने बचाई है तो वह खुश हो गई। अपने पंख पर बिठाकर उन्हें स्याहु तक पहुंचा दिया।

स्याहु ने छोटी बहु की ये सेवा देखी और प्रसन्न हो गई। प्रसन्न होकर उसे सात पुत्र और सात बहु होने का अशीर्वाद देती है। स्याहु के आशीर्वाद से छोटी बहु का घर पुत्र और पुत्र वधुओं से हरा भरा हो गया।

Instapdf.in

अहोई अष्टमी पूजा विधि

अहोई अष्टमी के दिन सबसे पहले स्नान कर साफ कपड़ें पहनें और व्रत का संकल्प लें।

- मंदिर की दीवार पर गेरू और चावल से अहोई माता और उनके सात पुत्रों की तस्वीर बनाएं। आप चाहें तो अहोई माता की फोटो बाजार से भी खरीद सकते हैं।
- अहोई माता यानी पार्वती मां के सामने एक पात्र में चावल से भरकर रख दें. इसके साथ ही मूली, सिंघाड़ा या पानी फल रखें।
- मां के सामने एक दीपक जला दें।
- अब एक लोटे में पानी रखें और उसके ऊपर करवा चौथ में इस्तेमाल किया गया करवा रख दें. दिवाली के दिन इस करवे के पानी का छिड़काव पूरे घर में करते हैं।
- अब हाथ में गेहूं या चावल लेकर अहोई अष्टमी व्रत कथा पढ़ें।
- व्रत कथा पढ़ने के बाद मां अहोई की आरती करें और पूजा खत्म होने के बाद उस चावल को दुपट्टे या साड़ी के पल्लू में बांध लें।

instapdf.in

- शाम को अहोई माता की एक बार फिर पूजा करें और भोग चढ़ाएं तथा लाल रंग के फूल चढ़ाएं ।
- शाम को भी अहोई अष्टमी व्रत कथा पढ़ें और आरती करें ।
- तारों को अर्घ्य दें ध्यान रहे कि पानी सारा इस्तेमाल नहीं करना है कुछ बचा लेना है । ताकि दिवाली के दिन इसका इस्तेमाल किया जा सके।

अहोई अष्टमी पूजा समाग्री

अहोई माता मूर्ति/चित्र,

स्याहु ,माला,

दीपक,

करवा ,

पूजा रोली अक्षत,

तिलक के लिए रोली,

दूब,

कलावा ,

पुत्रों को देने के लिए श्रीफल,

माता को चढ़ावे के लिए श्रृंगार का सामान,

बयाना,

Instapdf.in

सात्विक भोजन ,

चौदह पूरी और आठ पुओं का भोग,

चावल की कटोरी, मूली, सिंघाड़े, फल,

खीर,

दूध व भात,

वस्त्र,

बयाना में देने के लिए नेग (पैसे),

अहोई अष्टमी की पूजा सामग्री माता पर्वती की पूजा के लिए खरीदी जाती है। इसमें सबसे पहले अहोई माता की पूजा के लिए गेरू से दीवार पर अहोई माता का चित्र बनाया जाता है। साथ ही स्याहु और उसके सात पुत्रों का चित्र भी निर्मित किया जाता है।

अहोई अष्टमी की पूजा सामग्री में माता जी के सामने चावल की कटोरी, मूली, सिंघाड़े रखते हैं और सुबह दिया रखकर कहानी कही जाती है। कहानी कहते समय चावल हाथ में लिए जाते हैं, उन्हें साड़ी/सूट के दुप्पटे में बांध लेते हैं। सुबह पूजा करते समय लोटे में पानी और उसके ऊपर करवे में पानी रखते हैं। यह करवा चौथ में इस्तेमाल करवा होता है।

Instapdf.in